IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कामायनी में प्रतिफलित लोकमंगल

डॉ0 रवीन्द्र कुमार तिवारी
अस्सिटेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
सन्त विरागी बाबा पी0जी0 कालेज, घाटमपुर, कानपुर नगर

महाप्राण कवि निराला ने प्रेमचन्द और मैथिलीशरण गुप्त के बाद यदि किसी साहित्यकार की प्रशंसा में कुछ शब्द पुष्प समर्पित किया है, तो वे है जिन्हें वे अपना 'अंग्रज' कहते थे महाश्वेता के अमर पुत्र रचना मनीषी जय शंकर प्रसाद । इन्होंने 'शंकर' की भॉति अपने साहित्य – सृजन से लोक मंगलाश की 'जय' कर अपने नाम को प्रतिष्ठित कर दिया।

प्रसादकृत कामायनी आधुनिक युग के स्वर्ण काल के रूप में अभिहित छायावाद की प्रतिनिधि रचना है। आचार्य राम चन्द्र शुक्ल जिस समय मनोविकारों पर आधारित गद्य में चिन्तामणि जैसी उत्कष्ट रचना का सृजन कर रहे थे । कामायनी भी मनोविकारों पर ही प्रतिष्ठित है। कामायनी में 15 सर्ग है जिनमें अन्तिम सर्ग "आनन्द" सैव दर्शन से प्रभावित है , जो कहीं ना कहीं सत–चित–आनन्द अर्थात सच्चिदानन्द की मंगलाशा से ओत प्रोत है भारतीय दर्शन और साहित्य का पर्यवसान सदैव आनन्द से ही होता है जिसका निर्वाह कामायनी कार ने भी किया है।

कामायनी के पॉच सर्ग लोक मंगल के अन्तराय 'बाधक' है। चिन्ता वासना, ईर्ष्या , स्वप्न संघर्ष । आनन्द सर्ग में लोक मंगल प्रतिफलित हुआ है। प्रमुख चरित्र के रूप में श्रेद्धा और चित्रित है। श्रद्धा प्रसाद जी के अनुसार काम भावना उत्पन्न करती है जबकि 'मनु' के हृदय में कामभावना उत्पन्न करती है जबकि 'मनु' का चरित्र प्रसाद जी ने आधुनिक युवक के चरित्र के रूप में वर्णित किया है। जो हताशा, निरासा और आत्मविश्वास से रहित है। मन और श्रद्धा का रागपूर्ण साहचर्य मनु के जीवन का ही नही प्रत्यत कामायनी काव्य का सर्वोत्तम स्थल है। विद्वानों ने कामायनी को सर्वश्रेष्ठ सर्वो में श्रद्धा , लज्जा, स्वभाव को प्रतिबिम्बित किया है वही श्रंद्धा के कोमल, उदार सात्विक और आदर्श मयी महनिय चरित्र को उत्काठित किया है जो विश्वमंगल की कामना से परिपूर्ण है ।

श्रद्धा, दया, ममता एंव विश्वास का साक्षात प्रतिमूर्ति है प्रसाद जी श्रद्धा और मनु के स्परूप को वर्णित करते हुये कहते है –
एक गृहपति दूसरा था अतिथि विगत– विकार।
प्रश्न था यदि एक, तो उत्तर द्वितीय उदार ।।

जय शंकर प्रसाद कामायनी वासना सर्ग पृष्ठ

75 लोक भारती प्रकाशन :संस्करण–1994

प्रसाद जी ने कामायनी के आनन्द सर्ग में कैलास मान सरोवर में एक ऐसा कल्पना लोक स्थापित किया जो मंगलाश से परिपूर्ण है –
शापित न यहाँ है, कोई तापित प्राणी न यहाँ है ।
जीवन व सुधा समतल है, समरस है जो कि जहाँ है ।

कामायनी आनन्द सर्ग पृष्ठ 261 लोक भारती प्रकाशन संस्करण–1994

मनु राजा के लोक मांगलिक वैचारिक भिति को नष्ट करे सारस्वत प्रदेश की राजमहिषी इड़ा और उसे प्रजा पर अधिकार कर उसे अपने अधीन करना चाहता है परन्तु उसके प्रति प्रजा विरोधी बन जाती है ऐसी भयावह स्थिति में मुक्ति मार्ग इड़ा ढूँढती है और लोक मंगल के सबंध में मनु को समझाते हुए कहती है – लोक मुखी हो आश्रय ले यदि उस छाया में ।
प्राण सहृश तो रमो, राष्ट्र की इस काया में ।।
प्रसाद का काव्य डा0 प्रेम शंकर पृष्ठ–256

जयशंकर प्रसाद की रचना धर्मिता की लोक मांगलिक प्रत्याशा को इस कथन से समझा जा सकता है – उनको देश प्रेमी कवि "पेशोलाकी प्रतिध्वनि और शेर सिंह का शस्त समर्पण" में भारतीय सशस्त्र क्रांतिका मरसिया लिखता है तो प्रलय की छाया में नाम पर सिंह के अनुसार स्वराज पार्टी के सहयोग संघर्ष की भूमिका और पूर्ण परिणति की छाया है।"
वाद विवाद संवाद पृष्ठ–8

प्रसाद जी कामायनी से पूर्व अपनी 'कामना' नामक नाटक में श्री एक ऐसी व्यवस्था की परिकल्पना करते है

जहॉ न कोई शासक है न शासित। उनका भाव जगत मानता है कि राज्य से मुक्त हो जाना माननीय विकास

की उच्चतम दशा है जो उचित भी लगता है भेदरहित सामरस्य की उनकी मनोभूमि उनकी भाव भाषा में भूमा

है जो विश्व मानव की महाचिति है प्रसाद जी की परिकलप्ति विश्व नीड़ का स्वरूप उनके शब्दों में– सब भेद

भाव भुलाकर दुःख सुख को दृश्य बनाता है ।
मानव कह रे यह मै हूँ यह विश्व नीड बन जाता है ।
कामायनी आनन्द सर्ग पृष्ठ 226 प्रकाशन वही

प्रसाद की कामायनी कि जब अलंकार का पर्यवसान हो जाता है तभी समर सता स्थापित होती है। कामायनी में संगठित चेतना का संदेश है वौद्धिकता जन्य अंहता से ग्रस्त मानव दिनोंदिन अन्तमुर्ख होता जा रहा है जो कामायनी के अनुसार संघर्ष का कारण है मनु को लक्ष्य करती हुई श्रद्धा कहती है
अपने में सब कुछ भर कैसे व्यक्ति विकास करेगा।
यह एकान्त स्वार्थ भीषव है अपना नाश करेगा।
औरों को हॅसते देखो, मनु हॅसो और सुख पाओं
अपने सुख को विस्तृत कर लो सबको सुखी बनाओ।

जय शंकर प्रसादः कामायनी कर्म सर्ग पृष्ठ 122 प्रकाशन वही।

अन्तिम दो पक्तियों में प्रसाद जी ने श्रद्धा के माध्यम से जो लोक मंगलाश को सन्देश सम्प्रेषित किया है वह अपने वैशिष्ट्य को पूर्ण रूपेण फलित करता है श्रद्धा को यह मनुको उद्बोधन बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के विचार सकंल्प से प्रतिष्ठित है। कामायनी में प्रसाद जी ने सामरस्य या समरसता की बात की है जिसकी पूर्णता आनन्द सर्ग में प्रतिबिम्बित है वह समरसता का सिद्धान्त मूलतः प्रत्य भिजा दर्शन से उन्होने ग्रहण किया है सकन्द कारिका में उद्धत समरसता का स्वरूप कामायनी में भी दृष्टिगोचर होता है –
न दुःख न सुख यत न ग्राह्य कोवच ।
न चास्ति मूढभावोपि तदस्ति परमार्थतः ।।

अर्थात समरस दशा में पहुॅचने पर न तो दुख होता है न सुख न ग्राह्य रहता है न ग्राहक मूढभाव भी वहॉ नहीं रहता है केवल परमार्थता ही वहॉ रहती है यही परमार्थता लोकमंगला का विधायक है ।

अन्ततः प्रसाद जी से इस अमृत संतान को उभयदान देते हुये यह मंगलाशा प्रकट की है कि विश्व

मंगलमयी वृद्धि का ओर निरंतर अग्रसर है इस मंगलमयी यात्रा में वह उस परिपूर्ण स्थिति को प्राप्त कर लेगा।

जहॉ– हम अन्य न और कुटुम्बी हम केवल एक हमीं है
तुम सब मेर अवयव हो जिसमें कुछ न ही कमी है ।
प्रसाद कामायनी आनन्द सर्ग – 260 प्रकाशन वही

श्शैवागम के अनुसार यहा परमासम्भव दशा है और दर्शन के अनुसार यह परिपूर्ण व्यवस्था है महर्षि अरविन्द ने इसे 'अतिमानस' नाम दिया है प्रसाद जी ने इस अभेद श्रद्धायुक्त मानव माना है। वस्तुतः शश्वत सुख प्राप्ति के लिए आज इस अभेद अद्वैत भूमिका की आवश्यकता है। प्रसाद जी और उनकी महनीय कृति कामायनी की अंत में यही मंगल कामना है –

आनन्द उच्छदित शक्ति स्रोत जीवन विकास वैचित्य भरा जय शंकर प्रसाद विश्वनाथ प्रसाद तिवारी पृ– 61